विन्ध्यवासिनी की रहस्यमय साधिका

साधनाएं तो सैकड़ों-हज़ारों हैं, पर कुछ साधनाएं अपने-आप में अत्यन्त गोपनीय और महत्त्वपूर्ण मानी गई हैं। विन्ध्यवासिनी साधना भी ऐसी ही दुर्लभ एवं महत्त्वपूर्ण साधना है।

साधनात्मक ग्रन्थों के अनुसार दस महाविद्याओं की साधना करने से जो शक्ति प्राप्त होती है, वह केवल विन्ध्यवासिनी साधना करने से ही प्राप्त हो जाती है। इस एक साधना के द्वारा ही साधक जीवन की उस ऊंचाई को प्राप्त कर लेता है, जो उसके जीवन का लक्ष्य होता है।

विश्वामित्र ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'विश्वामित्र संहिता' में बताया है कि जीवन की सारभूत साधना विन्ध्यवासिनी साधना ही है। श्रेष्ठ योगी किंकर स्वामी ने कहा है कि विन्ध्यवासिनी साधना से जीवन के समस्त भोग-पदार्थ एवं सुख प्राप्त किए जा सकते हैं। संसार के श्रेष्ठ तान्त्रिक त्रिजटा अघोरी ने बताया कि विन्ध्यवासिनी साधना के द्वारा सिद्धाश्रम से सीधा सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है।

यह साधना क्यों?

1. इस साधना के द्वारा सिद्धाश्रम में आसानी से प्रवेश पाया जा सकता है।
2. इस साधना के द्वारा महाविद्याओं की साधना में तुरन्त सफलता एवं पूर्णता प्राप्त हो जाती है।
3. इस साधना के द्वारा पूरी प्रकृति अपने नियन्त्रण में हो जाती है और हम जिस प्रकार चाहें, प्रकृति से वे पदार्थ प्राप्त कर सकते हैं। जो हमारे जीवन के लिए आवश्यक हैं।
4. यह सूर्य सिद्धान्त की आधारभूत साधना है। इसको सिद्ध करने से सूर्य की किरणों से पदार्थ परिवर्तन क्रिया स्वतःसिद्ध हो जाती है।

5. इस साधना से अतुलनीय धन, यश, मान, पद, प्रतिष्ठा एवं वैभव प्राप्त किया जा सकता है।
6. इससे अपनी आयु जितनी भी चाहें बढ़ा सकते हैं। और अन्य सभी तान्त्रिक-मान्त्रिक साधनाओं में सिद्धि प्राप्त की जा सकती है।

साधना का आधार

इस साधना को पुरुष या स्त्री कोई भी सम्पन्न कर सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि कोई ऐसा उच्च कोटि का योगी जो कि साधक के जीवन में गुरु स्थान रखता हो, वह सिखा दे और सम्पन्न करवा दे। यह साधना किसी भी अमावस्या से प्रारम्भ की जा सकती है।

योगिनी का रहस्य लोक

मैं इस बात को स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि मुझे त्रिजटा अघोरी का शिष्य बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है और मैंने उनसे तन्त्र की अत्यधिक कठिन और गोपनीय क्रियाएं सीखी हैं। यदि मैं घमंड और गर्व न करूं तो मेरे नाम से ही तान्त्रिक भय खाते हैं, और ऊंचे-से-ऊंचा तान्त्रिक भी मेरे रास्ते से हट जाता है। मेरा नाम विशालनाथ है और यदि उच्च कोटि के तान्त्रिकों में मेरा नाम पुकारा जाए, तो वे चौकन्ने होकर इधर-उधर देखने लग जाते हैं।

उन दिनों मैं अपने साधना-मद से बंगाल के प्रसिद्ध तान्त्रिक मीनाक्षी के आसपास किसी ऐसे स्थान को ढूंढ़ रहा था, जो मेरी साधना के स्थान के अनुरूप हो। मैं लगभग छः महीने वहां रहना चाहता था और तन्त्र की कुछ उच्च कोटि की साधनाएं सम्पन्न करना चाहता था। गोरक्ष संहिता में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि गुप्त तान्त्रिक साधनाएं या तो उज्जैन में महाकालेश्वर मन्दिर के पास सिद्ध हो सकती हैं या बंगाल में मीनाक्षी मन्दिर के पास।

मीनाक्षी मन्दिर के पास ही त्रिशला पर्वत है। यह वही पर्वत है, जहां की प्रसिद्ध गुफा में गुरु गोरखनाथ ने साधना सम्पन्न की थी और उच्च स्तर की सिद्धियां प्राप्त की थीं। यह गुफा तान्त्रिकों के लिए वरदानस्वरूप है। कहते हैं कि यहां भगवान शिव गौरी के साथ नित्य रमण करते हैं। अर्धरात्रि को उसी गुफा में मुंडमाल पहनकर चामुंडा नृत्य करती हैं और मां विन्ध्यवासिनी इस गुफा में साक्षात सशरीर विद्यमान हैं। इसीलिए इस गुफा का सर्वाधिक महत्त्व है।

मैं त्रयोदशी के दिन विन्ध्यवासिनी मन्दिर पहुंचा और भगवती विन्ध्यवासिनी के दर्शन किए। मुझे उनके विग्रह में जाज्वल्यमान तेजस्वी स्वरूप के दर्शन हुए। यहां से लगभग छः मील पर ही वह प्रसिद्ध गुफा है, जिसका वर्णन सैकड़ों तान्त्रिक ग्रन्थों में आया है। मैं दर्शन कर सीधा उस गुफा की ओर बढ़ गया, क्योंकि दो दिन बाद ही अमावस्या होने वाली थी और इसी अमावस्या से मैं यह साधना प्रारम्भ करना चाहता था।

मैं अनुमान लगा ही रहा था कि कोई छोटा-मोटा तान्त्रिक गुफा के पास साधना कर रहा हो, पर इन टुच्चे तान्त्रिकों का मेरे जीवन में कोई महत्त्व नहीं था। अपनी उच्चकोटि की तान्त्रिक सिद्धियों पर मुझे गर्व था और मैं चाहता था कि उस गुफा में जब तक मैं साधना करूं, तब तक कोई दूसरा उस गुफा में न आए और मेरी साधना में विघ्न न डाले। इसीलिए मेरे साथ एक शिष्य भी था, जिसका कार्य गुफा के बाहर खड़े रहकर पहरा देना था, जिससे मैं अपनी साधना निर्विघ्न सम्पन्न कर सकूं।

मैं ज्यों ही गुफा के द्वार पर पहुंचा, तो द्वार के बाहर ही एक योगिनी को बैठे देखा। सुन्दर और आकर्षक चेहरा, तेजस्वी ललाट, गौर वर्ण, लम्बी जटाएं तथा लाल वस्त्र पहने हुए वह साधिका अपने-आप में साक्षात यौवन एवं रूप का समन्वय लग रही थी। उम्र होगी लगभग 25-26 वर्ष, परन्तु मैंने अनुभव किया कि वह कोई उच्च घराने से सम्बन्धित बालिका है और साधना में संलग्न है। इस बात का भी मैंने हल्का-सा अनुभव कर लिया कि इसने ज़रूर तन्त्र के क्षेत्र में छोटी-मोटी साधनाएं कर रखी होंगी।

इतनी कम उम्र में संन्यास लेने के पीछे ज़रूर कोई रहस्य रहा होगा, परन्तु मैंने एक ही क्षण में ये सारे विचार मन से निकाल दिए। वह गुफा के द्वार पर पालथी मारकर बैठी हुई थी और मुग्ध भाव से प्रकृति को निहार रही थी।

मैं सर्वथा अकेले में कुछ साधनाएं करना चाहता था, और इसके लिए यह आवश्यक था कि वह मायावी सुन्दरी योगिनी वहां से हट जाए। मैंने उस तरफ़ कोई विशेष ध्यान नहीं दिया और उसके पास से होकर गुफा के अन्दर जाने के लिए पैर बढ़ाए कि उसने पास ही पड़ी लकड़ी को तिरछी कर मेरे रास्ते को रोक दिया।

एक छोटी-सी छोकरी मेरा रास्ता रोकने की जुर्रत करे, यह मेरे लिए अपमानजनक था। मैंने भृकुटी चढ़ाकर जैसे ही उसकी तरफ़ ताका और लकड़ी को परे सरकाकर ज्यों ही मैंने आगे क़दम बढ़ाया कि ऐसा लगा, जैसे कोई अग्निरेखा खिंची हुई हो, जो अपने-आप में अदृश्य थी। उस रेखा को लांघते ही मेरा दाहिना पैर आग से झुलसकर रह गया। मैंने एकदम से पांव पीछे खींच लिया। आठ-दस क़दम पीछे हटकर एक पत्थर

पर बैठ गया और उस जले हुए पांव को सहलाने लगा।

मेरा पांव आग से धधक रहा था और घुटनों तक फफोले पड़ गए थे। मैंने क्रोध से उस मूर्ख लड़की की ओर देखा, तो वह मुझे देखकर मुस्कुरा रही थी। उस विषैली मुस्कुराहट ने तो मेरे क्रोध को पूरी तरह से भड़का दिया। मैं उठ खड़ा हुआ और चीख़ता हुआ बोला, ''दुष्ट मूर्ख लड़की! शायद तुझे पता नहीं कि मेरा नाम विशालनाथ है और मैं त्रिजटा अघोरी का शिष्य हूं। बड़े-से-बड़ा तान्त्रिक भी मेरे नाम से थर्राता है।''

वह छोकरी उसी प्रकार अपने स्थान पर बैठी रही। मेरी चीख़ के बाद वह धीरे से बोली, ''यह तो मैं देख रही हूं कि आप कितने बड़े तान्त्रिक हैं!''

उसके इस व्यंग्य से मैं छिद गया। ऐसा लगा किसी ने मेरे गाल पर ज़ोर से थप्पड़ मार दिया हो। मैं तिलमिला उठा और चेतावनी-भरे स्वर में चीख़ा, ''तुझे ज़रूरत से ज़्यादा घमंड हो गया है। एक-आध टुच्ची साधना सीखकर मुझसे टक्कर लेने की सोच रही है और इसमें निश्चय ही तेरा सर्वनाश है। मैं स्त्रियों पर साधनात्मक प्रहार नहीं करता। बस, तुझे चेतावनी दे रहा हूं, तू द्वार से हट जा जिससे कि मैं गुफा में बैठकर साधना सम्पन्न कर सकूं।''

''तन्त्र में न तो कोई स्त्री होता है और न कोई पुरुष। ऐसा कुछ होने का भ्रम रखना व्यर्थ है। तेरे मन में जो आए पहले वह कर ले, जिससे कि तुझे अपनी औकात का पता चल जाए।'' उसने बैठे-बैठे ही चेतावनी के उत्तर में जवाब दिया।

मैंने अब ग़ौर से उसकी ओर देखा। मैं जहां क्रोध से आगबबूला हो रहा था, वह अत्यधिक शान्त और सरल ढंग से बैठी हुई थी, जैसे कि कुछ हुआ ही न हो। मेरी चेतावनी का भी उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

मैंने मारण प्रयोग करने का निश्चय किया और सोच लिया कि इस पर धूर्जटा कृत्या फेंक देनी है, जिससे कि यह पानी के बबूले की तरह फूटकर समाप्त हो जाए, तभी उसको पता चलेगा कि विशालनाथ से टकराने का क्या मतलब होता है।

मैं अपने दोनों पांवों पर खड़ा हो गया। सिर की जटाओं को खोलकर बिखेर दिया। मेरी आंखों में साक्षात विध्वंसरूप साकार हो गया। मैंने मन्त्रबल से अपनी दाहिनी मुट्ठी में काली मिर्च के दाने प्राप्त किए। अपने गुरु त्रिजटा को स्मरण किया और धूर्जटा कृत्या मन्त्र पढ़ने लगा –

खड्ग चक्र कृपाण धूर्जटि प्रलय प्रलय।
विध्वंस विध्वंस मम शत्रुन् उच्छालय॥

मेरे होंठ तेज़ी के साथ मन्त्र जप कर रहे थे और हाथों में काली मिर्च लिए मैं साक्षात रौद्र भैरव लग रहा था, परन्तु वह उसी प्रकार शान्त भाव से मेरी ओर टुकुर-टुकुर ताक रही थी, जैसे उसे कुछ ज्ञात ही न हो। अभी मन्त्र पूरा होते ही ज्यों ही काली मिर्च के दाने उछालूंगा, त्यों ही यह अंगार पर पड़ी बूंद ही तरह छन्न कर भस्म हो जाएगी।

मैंने मन्त्र पूरा किया और कृत्या को अपनी आंखों के सामने प्रकट कर उसकी तरफ़ तेज़ी के साथ काली मिर्च के दाने फेंक दिए। पर मेरे लिए घोर आश्चर्य कि उसका कुछ भी अहित न हुआ। वह ज्यों-की-त्यों बैठी हुई मुस्कुरा रही थी तथा पागलों की तरह मेरी ओर ताक रही थी, जैसे कि वह स्पष्ट कर रही हो कि यह कैसा पागल है जो ऐसे छोटे-मोटे प्रयोग कर रहा है।

आज तक कृत्या का वार कभी ख़ाली गया ही नहीं। हज़ारों हाथी भी इस एक कृत्या के प्रयोग से काग़ज़ की तरह उड़ जाते हैं। बहुत ही कम तान्त्रिकों को ऐसी कृत्या सिद्ध हैं, पर यह तो अभी छोटी-सी बालिका है, फिर क्या इतनी समर्थ और सशक्त हो गई है कि इस कृत्या के प्रहार को भी निस्तेज कर सके। क्या वह कृत्या प्रयोग जानती है? अवश्य जानती होगी, तभी तो यह शान्त भाव से बैठी रही थी। उसको पता था कि मैं क्या कर रहा हूं और यह भी पता था कि इससे कुछ होने वाला नहीं है।

मेरा सारा दर्प, घमंड और अहं चूर-चूर हो गया था। मैं शर्म से पानी-पानी हो रहा था। मेरी आंखों में अब याचना थी। उसने मेरी ओर व्यंग्य से ताका और कहा, "ऐसे छोटे-मोटे प्रयोग कर डराने की ज़रूरत नहीं। तुझे ज्ञात होना चाहिए कि मैं स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी की शिष्या हूं और तेरे जैसे सैकड़ों तान्त्रिकों को जेब में रखती हूं। इस कृत्या से मेरे ऊपर कुछ होने वाला नहीं। मैंने यहां विन्ध्यवासिनी साधना सिद्ध की है और गुरुदेव की आज्ञा से ही मैं यहां पर हूं। फ़िलहाल मैं चार-पांच दिन और साधना करूंगी। उसके बाद अपने गुरु के पास चली जाऊंगी। ये बच्चों जैसी हरकतें भविष्य में मत करना।"

स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी का नाम तो अपने-आप में अद्वितीय है। उनकी यह शिष्या है, तो वास्तव में ही तन्त्र के क्षेत्र में अद्वितीय होगी ही। वे तो त्रिजटा के भी गुरु हैं और फिर इसने इस छोटी-सी उम्र में ही विन्ध्यवासिनी साधना सिद्ध कर ली है, तो ज़रूर इसमें शक्ति है, सामर्थ है और साधना की ऊंचाई है। मैंने आगे बढ़कर उसके चरणों को छू लिया।

मैंने कहा, "आपके जीवन का सौभाग्य है कि आप श्रीमाली जी जैसे योग्य गुरु की शिष्या हैं। केवल उनके शिष्यों में ही यह सामर्थ्य है कि वे कृत्या के वार को निष्फल कर दें। इस छोटी-सी उम्र में आपने विन्ध्यवासिनी साधना कर जो अद्वितीयता प्राप्त की है, वह श्रेष्ठ है। आपके चरणों में बैठकर यदि मैं कुछ सीखने का प्रयत्न करूं, तो यह बेकार नहीं होगा।"

वह अपने आसन से उठ खड़ी हुई। बोली, "आप आयु में वृद्ध हैं, परन्तु कृत्या जैसी साधनाएं तो अपने गुरु से मैं पांच साल पहले ही सीख चुकी थी। मुझे विन्ध्यवासिनी साधना सम्पन्न करने का आदेश प्राप्त हुआ था और गुरु आज्ञा से ही मैंने इस साधना को सिद्ध किया है। मैं चली जाऊंगी, तब आप भले ही इस गुफा में बैठकर साधना सम्पन्न करें।"

मैंने उसे हाथ जोड़कर निवेदन किया, "आप मुझे भाई समझकर यह साधना और इसके गोपनीय रहस्य सिखा दें, जिससे कि मैं भी इस साधना को सिद्ध कर सकूं और सफलता प्राप्त कर सकूं।"

प्रारम्भ में तो उसने मना कर दिया, परन्तु बाद में उसने कुछ सोचकर विन्ध्यवासिनी साधना रहस्य समझा दिया, जिसे सिद्ध कर मैंने अपने जीवन में वह पूर्णता प्राप्त की।

इसका संक्षिप्त विधान इस प्रकार है –

विनियोग

ओऽम् अस्य विन्ध्यवासिनी मन्त्रस्य, विश्रवा ऋषि
अनुष्टुपछंदः विंध्यवासिनी देवता ममाभीष्ट
सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

न्यास

ओऽम् विश्रवाऋषये नमः शिरसि ॥ 1 ॥
अनुष्टुपछंदसे नमः मुखे ॥ 2 ॥
विंध्यवासिनी देवतायै नमः हृंदि ॥ 3 ॥
विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥ 4 ॥

करन्यास

एहं हि अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ 1 ॥
यक्षि-यक्षि तर्जनीभ्यां नमः ॥ 2 ॥

महायक्षि मध्यमाभ्यां नमः ॥ 3 ॥
वटवृक्षनिवासिनी अनामिकाभ्यां नमः ॥ 4 ॥
शीघ्रं मे सर्वसौख्यं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ 5 ॥
कुरु-कुरु स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ 6 ॥

ध्यान

अरुणचंदनवस्त्रविभूषित।
सजलतोयदतुल्यनरूरुहाम् ॥
स्मरकुरंगदृशं विंध्यवासिनी।
क्रमुकनागलतादल पुष्कराम् ॥

प्रयोग विधि

इस महत्त्वपूर्ण साधना को सौभाग्यशाली साधक ही सम्पन्न कर सकता है। किसी भी अमावस्या की रात्रि को साधक स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर अपने सामने विन्ध्येश्वरी साधना यन्त्र स्थापित कर ले। उसके सामने सात गोल सुपारियां रख दे, फिर सामने घी का दीपक एवं अगरबत्ती लगाए।

सप्त सुपारी पूजा

ओऽम् कामदायै नमः ॥ 1 ॥ ओऽम् मानदायै नमः ॥ 2 ॥
ओऽम् नक्तयै नमः ॥ 3 ॥ ओऽम् मधुरायै नमः ॥ 4 ॥
ओऽम् मधुराननायै नमः ॥ 5 ॥ ओऽम् नर्मदायै नमः ॥ 6 ॥
ओऽम् भोगदायै नमः ॥ 7 ॥

इसके बाद सोने के अत्यधिक पतले तार को विन्ध्येश्वरी यन्त्र पर लपेटें तथा पूर्ण सिद्धि के लिए प्रार्थना करें। पूजन के बाद स्फटिक माला से मन्त्र जप सम्पन्न करें। नित्य इक्यावन माला मन्त्र जप इस यन्त्र के सामने आवश्यक है। मन्त्र –

एह्ये हि यक्षि महायक्षि विंध्यवासिनी शीघ्रं मे
सर्व तन्त्र सिद्धि कुरु-कुरु स्वाहा।

यदि आश्चर्यजनक सिद्धि प्राप्त करनी हो, तो नित्य एक सौ एक माला जप आवश्यक है।

यह ग्यारह दिन का प्रयोग है। अन्य साधनाएं भले ही निष्फल हो जाएं, पर इस साधना की यह विशेषता है कि ग्यारहवें दिन विन्ध्येश्वरी निश्चय ही सम्मुख प्रकट

होती है। साधक को पूर्ण आशीर्वाद प्रदान करती हुई उसके पूरे शरीर में समाहित हो जाती है तथा सभी दृष्टियों से उसकी रक्षा करती है। यही नहीं, अपितु ऐसा साधक तन्त्र के क्षेत्र में अनायास ही समस्त प्रकार की सिद्धियां स्वतः प्राप्त कर लेता है। ऐसी सिद्धि प्राप्त करने वाला व्यक्ति कृत्या-प्रयोग से भी नहीं डरता और जीवन में अद्वितीय यश और धन प्राप्त करता है। ऐसा संसार में कोई भोग नहीं है, जो उसे प्राप्त न हो।